साहित्य अकादेमी

4 जुलाई 2017

लेखक से भेंट

ज्ञान सिंह 'शातिर'

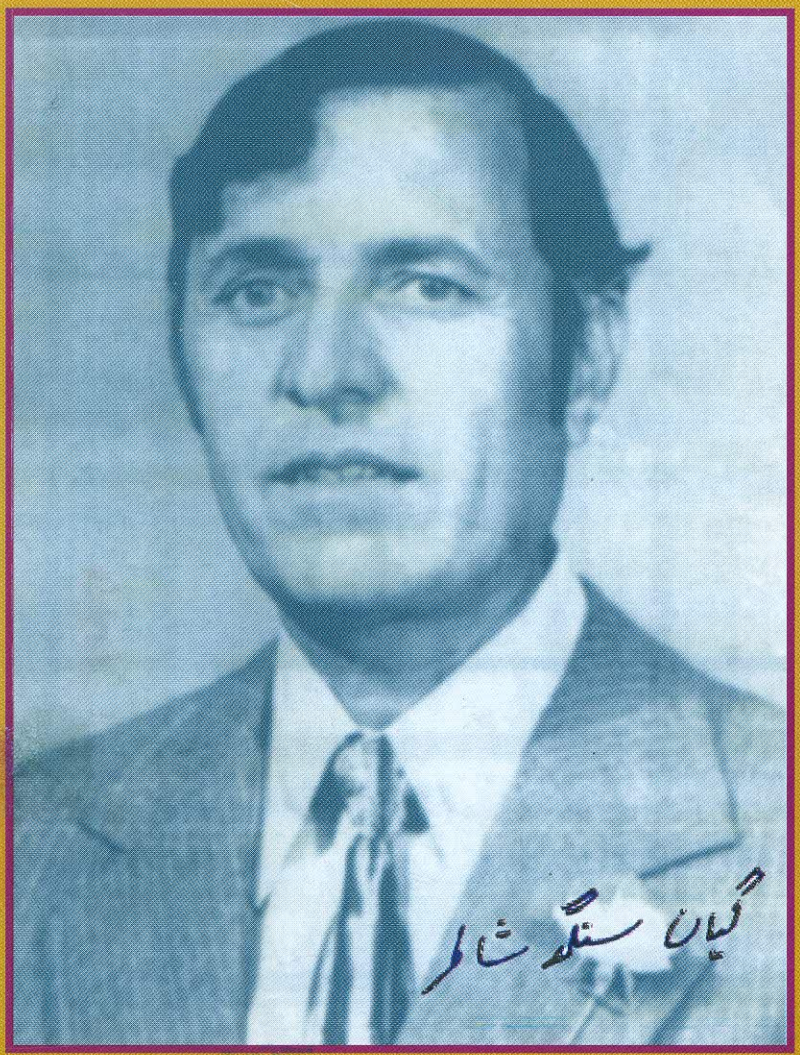

ज्ञान सिंह 'शातिर' महत्त्वपूर्ण शायर और अफ़सानानिगार हैं। उनका जन्म पंजाब के होशियारपुर ज़िले के डुडियाना कलां गाँव में 23 फ़रवरी 1936 को हुआ। तायाजी की कहानियों, धूप-छाँव के खेल, तिरंजन के गीत (वह गीत जो लड़कियाँ समूह में बैठ कर चर्ख़ा कातते हुए गाती हैं) और पंजाबी लोकगीत के धुन जग्गा के सरस सुरों के बीच ज्ञान सिंह का संस्कार हुआ।

ज्ञान सिंह 'शातिर' अपनी शिक्षा के बारे में लिखते हैं : "जिस तरह कोई गुंचा मौसम की नर्मी व सख़्ती झेलता हुआ काँटों के दर्मियान खिल उठता है, कुछ उसी तरह मेरी तालीम का आग़ाज़ हुआ। ...हरियाणा में (तब) इंग्लिश मीडियम के दो स्कूल थे, डी.ए.वी. हाईस्कूल और हिंदू मुस्लिम हाईस्कूल, लेकिन भाइयाजी (पिता) ने मुझे उर्दू मीडियम के डिस्ट्रिक्ट बोर्ड मिडिल स्कूल में दाख़िल करवाया।" उन्होंने 1953 में मैट्रिकुलेशन की परीक्षा उत्तीर्ण की।

ज्ञान सिंह 'शातिर' लिखते हैं : "पंजाबी मेरे लिए हवा-पानी, रोटी-कपड़ा, सोच-विचार, तन-मन, दुख-सुख, आहंग-तरंग, आनंद-सुगंध थी, मुख़्तसर यह कि मेरी ज़िंदगी थी। मेरे उस्ताद पंजाबीआमेज़ उर्दू बोलते थे और वैसे ही पढ़ाते थे।"..."मैंने अनोखे, बिल्कुल अनोखे माहौल में परवरिश पाई है। मेरे मदरसे रिवायती मदरसों से निराले थे। क़ुदरती मनाज़िर मेरे सहीफ़े थे और दरख़्त, फूल, फल, पत्ते, परिंदे, झरने...उनके औराक़ उनकी वज़ा, उनकी इबादत थी और नज़्ज़ारगी मानी बयानी। उनके दर्मियान मेरी ज़िंदगी तहरीके हमारंगी थी।"

ज्ञान सिंह 'शातिर' के स्कूल में हर महीने के आख़री हफ़्ते साहित्यिक गोष्ठी होती थी। हर किसी को सुनने-सुनाने की आज़ादी थी – गीत, चुटकुले, कविताएँ, ग़ज़लें, बोलियाँ। इन्हीं गोष्ठियों में सुनते-सुनाते ज्ञान सिंह 'शातिर' में शे'रो शायरी और अफ़साना-निगारी का हुनर आया। उनके पसंदीदा शायर अल्लामा इक़बाल थे लेकिन तक़्सीमे हिंद के बाद उनकी इस पसंदगी में वह बात न रही।

लोक संगीत में रुचि रखने वाले ज्ञान सिंह 'शातिर' ने मास्टर हंसराज के निर्देशन में 'साहूकार' और 'फलों का मुनाज़रा' नामी दो नाटकों में अभिनय भी किया। उन्हें शुरू से किताबें पढ़ने का बहुत शौक़ था जिसका ख़ास फ़ायदा यह हुआ कि उनके पास अल्फ़ाज़ का ज़ख़ीरा कई गुना बढ़ गया। उन्होंने कई ऐसी नज़्में याद कर लीं जो सैकड़ों अशआर पर मुश्तमिल थीं। इस पसंद ने उनके शायराना व्यक्तित्व का निर्माण किया।

बेहद संवेदनशील, नाज़ुक ख़याल ज्ञान सिंह 'शातिर' ने 1960 से लिखना आरंभ किया। अपने तख़ल्लुस के बारे में ज्ञान सिंह लिखते हैं : "मैं नौजवानी ही से 'शातिर' के नाम से जाना जाता हूँ हालाँकि न मुझे शतरंज खेलना आता है और न ही मैं स्वभाव से पाखंडी हूँ। ...मैं पैदाइशी शायर भी नहीं हूँ।" उन्हें 'बैतल' तख़ल्लुस के पंजाबी शायर ने यह नाम दिया था। बचपन से ही अनेक बदसलूक़ियों और बेजा बर्ताव ने ज्ञान सिंह की संवेदना को मार्मिकता प्रदान की। भारत विभाजन, दूसरा विश्वयुद्ध और उनके देखे हुए विस्थापन की पीड़ा, बेचैनी और बेरोज़गारी ने ज्ञान सिंह के अनुभव का विस्तार किया।

ज्ञान सिंह 'शातिर' का साहित्य अपनी पहचान की तलाश का दस्तावेज़ है। उनके हर्फ़ आँसुओं की शक्ल दर्ज हैं और जैसे नंगे खुले ज़ख़्म हैं। इन आँसुओं का रसायन सर्वगुण संपन्न है और बहुरंगी भी, इनमें जीवन का एक विलक्षण दर्शन उपलब्ध है। ज्ञान सिंह लिखते हैं : "मेरे आँसू मेरी उम्रे गुज़िश्ता का ऐसा जौहर हैं, जिसकी कीमियागरी हमा-सिफ़त है। कहीं मासूमियत का एहसास है और कहीं चालबाज़ी की बू-बास, कहीं मुर्दादिली की बे-कसी है और कहीं ज़िंदादिली की सरगर्मी, कहीं बचपन का उलझाव है और जवानी का सुलझाव,

कहीं ख़याल के ख़ाके हैं और कहीं अमल के नक़्शे, कहीं शिकस्त की क़नूतियत है और कहीं फ़तह की रिजाइयत। मैं कहीं टूटने और बिखरने लगता तो मेरे आँसू मुझे सँभालते और सहारा देते। उन्होंने मेरी परवरिश उस लाचार पौधे की तरह की है जिसे ठीक समय पर बरखा का अमृत न मिले तो वह अपनी ही आग में जल जाए।

शास्त्रों के लिहाज़ से आदमी, अश्वथ है (वह सदाबहार दरख़्त जिसकी जड़ें आसमान में और शाख़ें धरती पर हैं); तायाजी कहते थे कि आदमी, दरख़्त की तरह धरती की पैदावार है लेकिन इसकी जड़ें दिमाग़ में हैं। दिमाग़, इंसान के वजूद में छटा उन्सुर है और उन पाँचों अनासिर से ज़्यादा अहम है जिनकी मज़हब दलील देता है। दिमाग़ से इंसान का इर्फ़ान है और इर्फ़ान ही इंसान की क़ुव्वत है।...समझो तो रास्ते किताबे हयात के वर्क़ हैं जिनपर आदमी अपने-अपने नक़्श बना रहा है। इन औराक़ की ख़ूबी! इन पर करोड़हा नक़्शे बाहम दीगर सब्त हैं लेकिन हर कोई अपने तौर पर साफ़ और वाज़ेह है। आदमी को सिवाए हर चीज़ की इंफ़रादियत उसके ख़मीर में है लेकिन आदमी को अपनी इंफ़रादियत तलाश करनी पड़ती है।" अपनी पहचान की तलाश ही ज्ञान सिंह 'शातिर' को शायरों में अलग शायर और लेखकों में अलग लेखक बनाती है जिसमें उनकी ज़िंदगी की राहों, उनकी तमाम कारनामाकुन जगहों और हालात को लफ़्ज़ दर लफ़्ज़ पहचाना जा सकता है। *चाँद और रोटी* (कविता-संग्रह) और *ज्ञान सिंह शातिर* (आत्मकथात्मक उपन्यास) ज्ञान सिंह 'शातिर' की प्रकाशित महत्त्वपूर्ण कृतियाँ हैं। अकादेमी द्वारा पुरस्कृत आत्मकथात्मक उपन्यास *ज्ञान सिंह शातिर* में जीवन के कठोर यथार्थ का चित्रण है। अपनी अनगढ़ सुंदरता एवं प्रांजलता, निशस्त्र कर देने वाली अपनी स्पष्टवादिता और अपनी दृढ़ सर्जनात्मकता के नाते यह कृति उर्दू में लिखित भारतीय कथा-साहित्य को एक महत्त्वपूर्ण योगदान मानी गई है।

साहित्य अकादेमी के पूर्व अध्यक्ष और उर्दू के प्रसिद्ध समालोचक प्रोफ़ेसर गोपी चंद नारंग की ज्ञान सिंह 'शातिर' के अकादेमी से पुरस्कृत उपन्यास पर टिप्पणी दृष्टव्य है : "*ज्ञान सिंह शातिर* एक ऐसी हैरतज़दा कर देने वाली तस्नीफ़ है कि यह बात बिला-ख़ौफ़े तरदीद कही जा सकती है कि इस नौअ की किताब इससे पहले उर्दू में नहीं लिखी गई। हैरत इस बात पर भी है कि ज्ञान सिंह 'शातिर' ने उर्दू न कहीं बाक़ायदगी से पढ़ी और न वह उर्दू का जाना-पहचाना अदीब है। यह ग़ैर-मामूली किताब जिसे सवानही नाविल कहा गया है, ज़िंदगी की आतिशीं भट्टी से निकला हुआ अंगारा है जिसे शातिर ने हाथ में ले लिया है और अंगुलियाँ जला डाली हैं। ग़ालिब ने कहा था :

ख़ुद आगही को आबला दस्ती गवाह है
इस राख को कुरेदना आसाँ बहुत न था

बुल-अज्बी सी बुल-अज्बी कि ज्ञान सिंह शातिर ने अमदन आग में हाथ डाल दिया। डब्ल्यू.एच.ओ. की लगी-बँधी मुलाज़मत छोड़ दी, आबाई वतन होशियारपुर को ख़ैरबाद कहा और हैदराबाद में गोशा पकड़ा और उर्दू में दस्तरस हासिल करने में पूरी ज़िंदगी खपा दी कि वर्क़े नाख़्वांदा को पढ़-पढ़ा सकें। यह किताब इस ऐतबार से ज़िंदगी भर के रियाज़ और तपस्या का समर है। इसमें जिस अदबी जुर्रात और बेबाकी से ज़ात की पर्दादारी की गई है, इंसानी रिश्तों की जिन जज़्बाती गिरहों को खोला गया है, क़स्बात के कच्चे घरों और खुले खेत-खलियानों में परवरिश पाने वाली जफ़ाकश सिख साइकी के राज़ों को जिस तरह फ़ाश किया गया है, नीज़ फ़िक्र की जिस लबरेज़ शोआ और मुशाहिदे की जिस बारीकी से हक़ीक़तों के हुस्न, मासूमियत और ख़िब्स के आर-पार देखा गया है और जिस ताक़तवर और मज़बूत उस्लूब और खुले डले, बे-महाबा और पुर-क़ुव्वत इज़्हारी पैराए से बयानिया को क़ायम किया है और जमालियाती कैफ़ व कम, लुत्फ़ व निशात, रंज व ग़म और अज़्म व

ऐतमाद की जो तह-दर-तह और हमा-गीर फ़िज़ा मुतशक्कल की गई है, उसके बयान के लिए रस्मी अल्फ़ाज़ अधूरे और नामुकम्मल से लगते हैं। उर्दू को मुज़्दा कि इसमें एक ज़िंदा रहने वाली किताब का इज़ाफ़ा हो रहा है।"

अकादेमी के तत्कालीन अध्यक्ष श्री रमाकांत रथ से साहित्य अकादेमी पुरस्कार ग्रहण करते हुए

सैयद हाशिम अली, पूर्व कुलपति, अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी व उस्मानिया यूनिवर्सिटी, ने ज्ञान सिंह 'शातिर' के लेखन के बारे में लिखा है : "ज्ञान सिंह 'शातिर' की नस्र में एक हैरानकुन ताज़ा मौसीक़ी का एहसास होता है जो ज़बान की ताक़त, ज़िंदगी के दर्द व गुदाज़ और ख़यालात के इज़हार में किसी क़ैद व बंद को ख़ातिर में न लाने से पैदा होती है। इस में जिस बे-ख़तर बसीरत और हक़-गोई से काम लिया गया है, मुझे डर है कि कहीं तंग-नज़र क़दामत पसंदों के हाथों इस पर सेंसरशिप न बिठा दी जाए। अगर ऐसा हुआ तो सदियों से चली आ रही इस सच्चाई की मज़ीद तौसीक़ होगी कि आला अहलियत रखने वालों का मुक़द्दर मलामत है।"

संप्रति सिकंदराबाद, तेलंगाना में निवास कर रहे हैं।

जीवन-वृत्त

1936	:	23 फ़रवरी को डुडियाना कलां, होशियारपुर, पंजाब में जन्म।
1953	:	मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की।
1955	:	दिल्ली पॉलिटेकनिक में प्रवेश।
1958	:	दिल्ली पॉलिटेकनिक में उत्तीर्ण।
1962	:	1962 तक भाखड़ा बाँध परियोजना में सेवा दी।
1963	:	आई.डी.पी.एल. में कार्यभार ग्रहण किया।
1983	:	आई.डी.पी.एल. छोड़कर डब्ल्यू.एच.ओ. में कार्यभार ग्रहण किया।
1986	:	साहित्य सेवा के लिए डब्ल्यू.एच.ओ. से सेवानिवृत्ति ली।
1994	:	उनकी पुस्तक *ज्ञान सिंह शातिर* प्रकाशित।
1997	:	आत्मकथात्मक उपन्यास *ज्ञान सिंह शातिर* के लिए साहित्य अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित।

साहित्य अकादेमी
रवींद्र भवन, 35 फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली 110001
फ़ोन नं. : 011-233826/27/28 फ़ैक्स : 011-23382428
ई-मेल : secretary@sahitya-akademi.gov.in
वेबसाइट : http//www.sahiya-akademi.gov.in
फेसबुक : http://www.facebook.com/SahityaAkademi